चतुर्थ दृश्य

सूत्रधार– नन्दालय में पहुँच कै, देखी जसुदा माय।
उद्धव समझावे लगे, पर जसुदा समझ ना पाय।।
उद्धव निर्गुण ब्रहम कौ, करवे लगे बखान।
पर तरकन के सामने, गयौ ज्ञान कौ मान।।

यशोदा–अरे! मेरौ कन्हैया वन सौ गईया चरा कै आ रह्यौ होगौ और मैं बावरी सी ऐसी ही बैठी हुयी हूँ। मैं अपने लाला कू भोजन की व्यवस्था तौ कर लउँ।

नन्दबाबा–देखौ! ये बावरी नित्य वाकू भोजन लगाए जाकू आनौ ही नाए। अरी जशोदा व्यर्थ में अपने मन कू क्यों समझाय रही है। अब वो लौट कै नहीं आयेगौ। क्योंकि वह नन्द यशोदा कौ लाल नहीं वह तौ महाराज वासुदेव और देवकी कौ लाल है गयौ है। अब वह ग्वारिया नहीं वह तौ राजा है गयौ है राजा।

उद्धव–मइया बाबा मैं आपकू प्रणाम करूं हूँ।

यशोदा–कौन हो भइया!

उद्धवजी–मइया मैं आपके कन्हैया कौ सखा हूँ। मेरो नाम उद्धव है।

यशोदा–अरे मेरे लाला कौ सखा, अरे उद्धव तू मथुरा से आयौ है। मेरे कन्हैया और बलराम की कछु सता तौ सुना। वे दोनों प्रसन्न तौ हैं। वहाँ मथुरा में वे ढंग सौ भोजन करै हैं कि नाए। उद्धव वाकौ मन मथुरा में लग गयौ है कि नाए। कहीं मेरौ लाला मथुरा में दुखी तौ नाए है। और उद्धव वो कबहू हमें याद करै है कि नाए करैं है।

उद्धवजी–मइया वो नैकहू दुखी नाए। आप सबकू याद करे याही कारण सौ ही तौ मोकू ब्रज में भेजो है। किन्तु आप दुखी मत हो। वह कृष्ण निर्गुण निराकार है।

बिनु पग चलई सुनै बिनु कान्हा,
कर बिनु करम करै विधि नाना।

वाके ना तौ हाथ हैं ना पैर हैं और नाही कान हैं।

यशोदा–अरे उद्धव तू कह रह्यौ है वाके नेत्र नहीं तौ इन्हीं हाथन ते तेरे वा निर्गुण निराकार के मैंने काजल लगायौ है, तू कह रहयौ है वाके मुख नहीं तौ इन्हीं हाथन सौ मैंने वाकू माखन खवायौ है। तू कह रहयौ है वाके हाथ नहीं तौ वाके हाथन कू मैंने इन्हीं हाथन कू उखल सौ बांध दियौ हो। मेरौ कन्हैया याही कारण ते यहाँ ते रिस हैके चलो गयो है। अरे कन्हैया, अरे मेरे लाला, अरे मेरे कनुआ।

उद्धवजी–बाबा मइया कौ तौ विलक्षण भाव है या भाव में तौ मेरौ मन ही बह गयौ। अब मैं उनकी लीला तौ बाद में सुनूंगो। अब मैं गोपिन कू संदेस और दै आउँ।

नन्दबाबा–ठीक है लाला गोपिन सौ मिलके लौट के अवश्य आइयों।

पंचम दृश्य

सूत्रधार– नन्दालय में हू भये, उद्धव बहुत निराश।
पाती लैके कृष्ण की, पहुँचे गोपिन पास।।
निर्गुण की अरू सगुण की, चली खूब सहमात।